Nai Dunia (Indore), 03rd July 2024, Page - 03

नवाचार

आइआइटी इंदौर के प्राध्यापक ने तैयार की किट, शुरू कर सकेंगे पीड़ित का उपचार

लक्षणों से अल्जाइमर बीमारी की शुरुआती स्टेज का लगा सकेंगे पता

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : इंडियन इंस्टिट्यूट आफ टेक्नोलाजी इंदौर (आइआइटी) ने अल्जाइमर बीमारी को लेकर एक नई खोज करने में सफलता मिली है। लक्षणों के आधार पर बीमारी का पता लगाने को लेकर एक किट बनाई है, जो शुरुआती स्टेज में अल्जाइमर का उपचार करने में आसानी होगी।

चिकित्सा क्षेत्र में आइआइटी इंदौर द्वारा बनाई किट को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बतौर देखा जा रहा है। इसकी मदद से बीमारी का सही ढंग से उपचार कर अल्जाइमर रोग से मरीज को छुटकारा दिलाया जा सके। आइआइटी इंदौर की टीम ने किट का पेटेंट करवाया है। बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग प्रमुख डा. हेमचंद्र झा का कहना है कि किट उन लोगों की स्क्रीनिंग करने में मदद करेगी, जो एपस्टीन बार वायरस से अल्जाइमर रोग से पीड़ित हैं। यह किट प्रारंभिक चरण को पता लगाकर बीमारी की स्टेज के बारे में बताएगी।

किट बनाने वाले डा. हेमचंद्र झा (मध्य में) टीम के साथ। ● नईदुनिया

बायोसाइंस और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग के डा. हेमचंद्र झा ने एक किट तैयार की है, जो अल्जाइमर रोग के प्रारंभिक चरण का पता लगाने में सक्षम है। वे बताते हैं कि अभी तक आमतौर पर अल्जाइमर बीमारी बढ़ती उम्र वाले बुजुर्गों में देखने में आई है। उनमें अपनी धीरे-धीरे याददाशत खोने जैसे लक्षण सामने आते है। जब तक इसका पता चलता है। तब तक बीमारी अपने आखिरी चरण में पहुंच जाती है। अभी तक बीमारी का चिकित्सा क्षेत्र में सटीक उपचार नहीं है। वे कहते है कि एपस्टीन बार वायरस के अटैक करने से बीमारी शरीर में घर करती है। शुरू में मनुष्यों की प्रतिरोधक क्षमता अच्छी रहती है। इसलिए बीमारी के बारे में जल्दी पता नहीं लगता है। जैसे-जैसे प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है। बीमारी का असर नजर आता है। उन्होंने कहा कि अल्जाइमर बीमारी का सीधा संबंध न्यूरोलाजी से रहता है। धीरे-धीरे वायरस मस्तिष्क पर प्रभाव डालने लगता है, जो तंत्रिका तंत्र को बिगड़ा देता है। वैसे अल्जाइमर बीमारी कभी भी अचानक नहीं होती।

एंटीबाडी आधारित कर सकते है जांच

डा. झा का कहना है कि यह किट वायरल काउंटर पार्ट की प्राइमर आधारित पहचान के साथ-साथ स्क्रीनिंग के लिए एंटीबाडी-आधारित जांच करती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बीमारी को पता लगाने के लिए किसी भी प्रकार की स्क्रीनिंग की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। अल्जाइमर रोग धीरे-धीरे बढ़ता है। वे बताते हैं कि किट का उपयोग कर अल्जाइमर के इलाज में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि किट का पेटेंट करवाया गया है। संस्थान अब इस किट के व्यवसायीकरण पर काम कर रहा है, जो उभरती स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं को पूरा करेगा। यह परियोजना वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) से वित्त पोषित है।